Emerging Trends in Education [Vol. V - No. 1 . pp 55-59]

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

ध्यानेन्द्र कुमार मिश्र*

वर्णगत एवं जातिगत विभिन्नता से हटकर भी देखा जाय तो वैयक्तिक भिन्नता एक अपरिवर्तनीय सत्य है। समाज व्यक्तियों का समूह है। अतः विश्व के प्रत्येक समाज में विभिन्नता का होना अवश्यम्भावी है। इन विभिन्नताओं का स्वरूप सम्पूर्ण विश्व में वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं जातिगत विभिन्नताओं के रूप में परिलक्षित होता है। यही विभिन्नतायें अनेकता के नाम से जानी जाती हैं और विश्व का प्रत्येक समाज अनेकता में रहते हुये एकता की दिशा में अग्रसर होना चहता है। विश्व के प्रत्येक समाज में उसकी अनेकता को एकता के रूप में सुगठित तथा सुनियोजित करने हेतु अनेकों नियमों, परिनियमों, क्षेत्रीय एवं वैश्विक संगठनों को निर्मित किया गया है ताकि व्यक्ति एवं समाज को समुन्नति की ओर ले जाया जा सके। परन्तु मनुष्य के विकास के कालक्रम को देखने से यह स्पष्ट होता है कि आज भी सम्पूर्ण विश्व सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं जातिगत घेरों में अपने को जकड़े हुये अपने विकास को तो अवरूद्ध कर ही रहा है बल्कि उससे जनित ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, स्पर्धा, कलह एवं शत्रुता से पीड़ित होते हुये अपने शान्तिपूर्ण विकास को बाधित कर समाज में विषम परिस्थितियाँ उपत्न्न कर रहा है।

स्वयं भारतीय समाज भी ऐसी परिस्थितियों से प्रतिपल अपने विकास हेतु संघर्षरत है। यदि देखा जाय तो भारतीय वर्ण व्यवस्था का भी भारतीय समाज के विकास को अवरूद्ध कर उसे पतनोन्मुख बनाने में कुछ योगदान रहा है। कर्मणा आधार पर विकसित ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, जन्मना मान्यताओं से ग्रसित होकर परस्पर ईर्ष्या, द्वेष एवं घृणा के पोषक होते गये। जो समाज में घुटन ही नही वरन् परस्पर प्रछन्न संघर्ष का रूप लेता गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में अनेकों अनुच्छेदों की व्यवस्था कर संवैधानिक उपचार से इसे निष्क्रिय करने का प्रयास किया गया फिर भी पूरी तरह इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सका।

अध्ययन की समस्या

विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्थितियों में रह रहे व्यक्तियों के अन्तर्मन में मनोकामनाओं (Psychological Needs) का स्वरूप भी भिन्न–भिन्न होता है। अतः मनोकामनाओं के स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है तभी अखिल भारतीय स्तर पर व्याप्त जातीय संकीर्णता और कलह, क्षेत्रीयता एवं धर्म भेद, भौतिक विपन्नता एवं हीनता, शैक्षिक एवं सामाजिक पिछड़ापन जैसी समस्या के समाधान की दिशा में सही प्रयास हो सकता है।

* प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

अध्ययन का उद्देश्य – माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं समान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं के प्रारूप को ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पना – माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं में परस्तर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि – प्रस्तुत अध्ययन में उपयुक्तता एवं सार्थकता की दृष्टि से वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method) को उपयोग में लाया गया है।

प्रतिदर्श –प्रतिदर्श के रूप में वाराणसी जनपद में स्थित नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा नौ के छात्र–छात्राओं को सहज संयोगिक प्रतिदर्श विधि (Simple Random Sampling Method) द्वारा चयनित किया गया है। सामान्य एवं अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को मिलाकर कुल प्रतिदर्श संख्या 240 है।

उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू वि0वि0 के प्रो0 आर0आर0 त्रिपाठी द्वारा निर्मित त्रिपाठी पर्सनल प्रेफरेन्स सेड्यूल (टी0पी0पी0एस0) जिसे आपकी पसन्दः एक अनुसूची के नाम से भी जाना जाता है का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय परिगणना – प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी के उपयोग के अतिरिक्त तुलनात्मक समूहों के बीच अन्तर की सार्थकता की जानकारी हेतु टी–मान एवं क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio) निकाला गया है जो तालिका संख्या 01 में निम्नवत् प्रस्तुत है :

परिणाम एवं विवेचन

तालिका–1. अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं का तुलनात्मक विवरण

क्रम संख्या	मनोकामना	अनुसूचित जाति		सामान्य जाति		क्रान्तिक अनुपात
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
1.	अर्जन	14.68	3.63	14.65	3.29	0.08
2.	विनय	13.08	3.55	13.60	3.06	1.95
3.	सुव्यवस्था	15.35	3.45	14.94	3.57	1.45
4.	प्रदर्शन	13.64	3.29	14.15	3.15	1.93
5.	स्वत्व	14.99	3.05	14.22	3.46	2.91**
6.	सम्मिलन	14.24	3.76	14.98	3.74	2.42*

7.	अन्तरावरोधन	13.39	3.09	13.42	3.02	0.14
8.	परावलम्बन	14.23	3.40	14.23	2.97	0.01
9.	प्रभुत्व	13.49	3.49	13.29	3.19	0.71
10.	दैन्य	14.89	4.26	15.02	4.26	0.36
11.	पोषण	14.71	4.01	15.85	3.96	3.50**
12.	परिवर्तन	13.73	3.58	13.75	3.53	0.05
13.	सहनशीलता	15.14	3.88	15.60	4.30	1.36
14.	विषमलैंगिकता	11.96	7.40	10.02	7.27	3.23*
15.	आक्रामकता	12.56	3.69	12.33	3.90	0.74

* .01 विश्वास स्तर पर सार्थक
** .05 विश्वास स्तर पर सार्थक

प्रदत्तों के सांख्यिकीय परिगणना से प्राप्त परिणामों से ज्ञात हो रहा है कि माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की अधिकांश मनोकामनाओं के मध्यमान परस्पर समान हैं। केवल "स्वत्व" एवं "विषम लैंगिकता" की मनोकामनाओं पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान समान्य जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान की तुलना में उच्च है, जबकि सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में "सम्मिलन" एवं पोषण की मनोकामनाओं पर उच्च है। इससे स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की विभिन्न मनोकामनाओं के प्रारूप में सामान्यतया परस्पर समरूपता है।

अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों की विभिन्न मनोकामनाओं के क्रान्तिक अनुपात की परिगणना से ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का "स्वत्व" की मनोकामना पर मध्यमान 14.99 है, जो सामान्य जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान 14.22 से उच्च है। इनका क्रान्तिक अनुपात 2.91 है जो .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। विषम लैंगिकता की मनोकामना पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 11.95 है जो सामान्य जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान 10.02 से उच्च है। इनका क्रान्तिक अनुपात 3.23 है, जो .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की स्वत्व एवं विषम लैंगिकता की मनोकामनायें सामान्य जाति के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रबल हैं।

सम्मिलन की मनोकामना पर सामान्य जाति का मध्यमान 14.98 है जो अनसूचित जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान 14.24 से उच्च है। इनका क्रान्तिक अनुपात 2.42 है, जो .05 विश्वास

स्तर पर सार्थक है। इसी प्रकार पोषण की मनोकामना पर सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.85 है जो अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान 14.71 से उच्च है। इनका क्रान्तिक अनुपात 3.50 है जो .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सम्मिलन एवं पोषण की मनोकामनायें अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक प्रबल हैं। गुप्ता, (1978), के अध्ययन से प्राप्त परिणाम में भी स्वत्व, प्रभुत्व एवं विषम लैंगिकता की मनोकामनाओं के अतिरिक्त आक्रामकता, अर्जन तथा दैन्य की मनोकामनायें अनूसूचित जाति के विद्यार्थियों में प्रबल पायी गयी जबकि सामान्य जाति के विद्यार्थियों में सम्मिलन, पोषण के अतिरिक्त सहनशीलता की मनोकामनायें बलवती पायी गयी। इस अध्ययन के प्राप्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि जातीय चर मनोकामना चर पर विशेष रूप से प्रभावी नहीं हैं। अतः अध्ययन की प्रथम परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं में परस्पर कोई सार्थक अन्तर नही है, आंशिक रूप से स्वीकृत है।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक कक्षा में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं में कुछ को छोड़कर सर्वत्र समरूपता ही दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक समूह सकारात्मक मनोकामनाओं से आप्लावित होकर अपने परिसर के दबावों को सफलता पूर्वक दूर करने के प्रयासों में लीन होकर सकारात्मक मनोकामनाओं को दृढ़ करने में संलग्न दिखाई देता है।

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में स्वत्व एवं विषम लैंगिकता की मनोकामनायें सामान्य जाति के विद्यार्थियों की तुलना में प्रबल हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी समाज में अपनी वर्चस्वता स्थापन तथा ऐन्द्रिक सुख के लिए उन्मुख हैं। सामान्य जाति के विद्यार्थियों में पोषण एवं सम्मिलन की मनोकामनायें अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में प्रबल है। जिससे स्पष्ट है कि सामान्य जाति के विद्यार्थी समाज के प्रति सेवा, सहायता तथा सहयोगी भाव की कामना रखते हैं।

अतः विद्यालयों के शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में इन मनोकामनाओं के स्वस्थ शिक्षण तथा समायोजन पर विशेष ध्यान दिया जाय। शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में सामाजिक संगठन, सहकारिता, देश सेवा, यौन शिक्षा आदि के समावेश पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ–साथ शिक्षणेत्तर क्रिया कलापों में सामुदायिक कार्यक्रम, शैक्षणिक भ्रमण, स्काउटिंग, एन.सी.सी. आदि कार्यक्रमों पर विशेष बल देकर विद्यार्थियों में सकारात्मक मनोकामनाओं को विकसित कर स्वस्थ समायोजन विकसित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कौल, एल, (1974), डिफरेन्सेज इन नीड्स अफिलियेशन एण्ड नीड्स एबेसमेन्ट एमंग एडोलेसेन्ट्स ऐट हाई एण्ड लो लेवल ऑफ इन्टिलिजेन्स एण्ड सोशियो इकोनामिक स्टेटस, शोध प्रबन्ध कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- गुप्ता, एल0पी0 (1978), ए स्टडी ऑफ पर्सनल कैरेक्ट्रिसटिक्स एण्ड एकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ शेड्यूल कास्ट एण्ड बैकवर्ड क्लास स्टूडेन्ट, शोध प्रबन्ध, मेरठ, विश्वविद्यालय।
- पण्डित, आई0 (1985), ए स्टडी ऑफ द साइकोलाजिकल नीड्स एण्ड सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ एडोलेसेन्टस एण्ड देयर बियरिंग ऑन ऐडजेस्टमेन्ट, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, बॉम्बे यूनिवर्सिटी।
- मनोविज्ञान शाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, (1986): चित्र कथानक परीक्षा निर्देशिका, हिन्दी अनुशीलन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश।
- मिश्र, डी0के0 (2007), विभिन्न जातीय समूहों के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं एवं शैक्षिक दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षा संकाय, म0गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- मिश्र, डी0के0 (2000), स्नातक कक्षा के विद्यार्थियों के विभिन्न शैक्षिक समूहों का मनोकामना प्रारूपः एक विभेदात्मक अध्ययन (अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध), शिक्षा संकाय, म0गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
- शर्मा, डी0के0 (1989), हाईस्कूल एवं इण्टरमिडिएट कक्षा के विद्यार्थियों की मनोकामनाओं का तुलनात्मक अध्ययनः (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- त्रिपाठी, आर0आर0 (1973), मैनुअल फॉर आप की पसन्दः एक अनुसूची (टी0पी0पी0एस0), रघुबीर शरण पब्लिकेशन्स, राज मंदिर, वाराणसी।